बिरसा कृषि विश्वविद्यालय : एक झलक

कृषि, पशुपालन एवं वानिकी तकनीकों की शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के माध्यम से छोटानागपुर एवं संथाल परगना के किसानों की सामाजिक-आर्थिक दशा सुधारने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना सन 1980 में हुई, जिसका विधिवत उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 26 जून, 1981 को किया ।

वर्त्तमान में इसके अन्तर्गत कृषि, पशुपालन एवं वानिकी संकाय और इसके अधीन 11 महाविद्यालय कार्यरत हैं ।

कृषि शिक्षा

विश्वविद्यालय में कृषि संकाय के अधीन चार कृषि महाविद्यालय, एक कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय तथा एक बागवानी महाविद्यालय कार्यरत हैं । ये महाविद्यालय हैं :

रांची कृषि महाविद्यालय, कांके, रांची

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1955 में हुई थी । इस महाविद्यालय के अधीन कृषि के विभिन्न विषयों के अधीन स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी पाठ्क्रमों का संचालन किया जाता है । चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम बीएससी इन एग्रीकल्चर में कुल सीटों की संख्या 80 है । स्नातकोत्तर पाठ्क्रमों एमएससी इन एग्रीकल्चर में 62 व एमटेक इन एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग में 6 तथा पीएचडी इन एग्रीकल्चर पाठ्क्रमों में कुल सीटों की संख्या 16 है । वर्तमान में महाविद्यालय के अधीन सस्य, आनुवंशिकी और पौधा प्रजनन, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, उद्यान, पौधा रोग , कीट विज्ञान, एग्रोमेट्रोलोजी एवं पर्यावरण विज्ञान, कृषि अभियन्त्रण, कृषि प्रसार शिक्षा एवं संचार , कृषि अर्थशास्त्र, कृषि

सांख्यिकी एवं कंप्यूटर एप्लीकेशन, क्रॉप फिजियोलॉजी एवं गृह विज्ञान विभाग कार्यरत हैं ।

रबींद्रनाथ टैगोर कृषि महाविद्यालय, देवघर

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 में हुई थी । यह महाविद्यालय देवघर जिला मुख्यालय से 25 किलो मीटर दूर मोहनपुर प्रखंड के बेजन्दी गाँव में स्थित है । इसके अधीन कुल 11 विभागों में सस्य, आनुवंशिकी और पौधा प्रजनन, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, उद्यान, पौधा रोग , कीट विज्ञान, कृषि अभियन्त्रण, कृषि प्रसार शिक्षा एवं संचार , कृषि अर्थशास्त्र, कृषि सांख्यिकी एवं कंप्यूटर एप्लीकेशन तथा वोकेशनल कोर्स कार्यरत है और वर्तमान में चार वर्षीय बीएससी इन एग्रीकल्चर स्नातक पाठ्यक्रम के अधीन कुल सीटों की संख्या 50 है ।

कृषि महाविद्यालय, गढ़वा

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 में हुई थी । इसके अधीन कुल 11 विभागों में सस्य, आनुवंशिकी और पौधा प्रजनन, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, उद्यान, पौधा रोग , कीट विज्ञान, कृषि अभियन्त्रण, कृषि प्रसार शिक्षा एवं संचार , कृषि अर्थशास्त्र, कृषि सांख्यिकी एवं कंप्यूटर एप्लीकेशन तथा वोकेशनल कोर्स कार्यरत है और वर्तमान में चार वर्षीय बीएससी इन एग्रीकल्चर स्नातक पाठ्यक्रम के अधीन कुल सीटों की संख्या 50 है ।

तिलका मांझी कृषि महाविद्यालय, गोड्डा

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 में हुई थी । गोड्डा स्थित इस महाविद्यालय के अधीन कुल 11 विभागों में सस्य, आनुवंशिकी और पौधा प्रजनन, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, उद्यान, पौधा रोग , कीट विज्ञान, कृषि अभियन्त्रण, कृषि प्रसार शिक्षा एवं संचार , कृषि अर्थशास्त्र, कृषि सांख्यिकी एवं कंप्यूटर एप्लीकेशन तथा वोकेशनल कोर्स कार्यरत है

और वर्तमान में चार वर्षीय बीएससी इन एग्रीकल्चर स्नातक पाठ्यक्रम के अधीन कुल सीटों की संख्या 50 है।

कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, रांची

कांके स्थित इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2018 में हुई। इसके तहत मौलिक अभियंत्रण एवं व्यावहारिक विज्ञान, मृदा एवं जल सरक्षण अभियंत्रण, सिंचाई एवं जल निकास अभियंत्रण, फार्म मशिनरी एंड पॉवर इंजीनियरिंग, प्रोसेसिंग एंड फ़ुड इंजीनियरिंग तथा नवीकरणीय ऊर्जा अभियंत्रण विभाग कार्यरत है और वर्तमान में चार वर्षीय बीटेक इन एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग स्नातक पाठ्यक्रम के अधीन कुल सीटों की संख्या 40 है।

बागवानी महाविद्यालय, खूँटपानी, पश्चिमी सिंहभूम

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2018 में हुई। वर्तमान में यह कांके स्थित बागवानी विभाग में कार्यरत है। इसके अधीन फल विज्ञान, सब्जी विज्ञान, फ्लोरीकल्चर एंड लैंड स्केपिंग, पोस्ट हार्वेस्ट टेकनोलॉजी, बेसिक साइंस, पौधा संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और सोशल साइंस विभागों का संचालन किया जा रहा है। इस महाविद्यालय के चार वर्षीय बीएससी इन हॉर्टिकल्चर स्नातक पाठ्यक्रम में कुल सीटों की संख्या 50 है।

सेन्टर ऑफ़ एग्रीबिजिनेस मैनेजमेंट केंद्र

कृषि संकाय के अधीन नियमित कोर्स के महाविद्यालयों के अतिरिक्त एक सेन्टर फॉर एग्रीबिजिनेस मैनेजमेंट केंद्र का भी संचालन किया जा रहा है। कृषि व्यवसाय प्रबंधन विषय के इस मास्टर ऑफ़ बिजिनेस मैनेजमेंट इन एग्रीबिजिनेस के दो वर्षीय पाठ्यक्रम के अधीन कुल सीटों की संख्या 30 है।

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन शिक्षा

इसके अधीन पशुचिकित्सा संकाय में पशुचिकित्सा व पशुपालन, दुग्ध प्रौद्योगिकी और मत्स्य प्रौद्योगिकी से सबंधित तीन महाविद्यालय कार्यरत हैं। वे महाविद्यालय हैं :

रांची पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, कांके, रांची

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1961 में हुई थी । इस महाविद्यालय के अधीन पशुचिकित्सा एवं पशुपालन से सबंधित विषयों के अधीन स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी पाठ्क्रमों का संचालन किया जाता है। इसके तहत बीभीएससी इन वेटनरी के पाँच वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में कुल सीटों की संख्या 60 है। एमभीएससी इन वेटनरी के दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्क्रमों में कुल सीटों की संख्या 35 तथा पीएचडी इन वेटनरी के तीन वर्षीय पाठ्क्रमों में सीटों की संख्या 6 है । वर्तमान में महाविद्यालय के अधीन शल्य चिकित्सा, गर्भ विज्ञान, परजीवी विज्ञान, जैव रसायन, पशु जन स्वास्थ्य , पशु औषधी , शरीर क्रिया, पशु रोग, भेषज एवं विष विज्ञान और पशु प्रजनन एवं आनुवंशिकी, माइक्रोबायोलॉजी साइंस, पशु उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु शरीर संरचना, पशु उत्पाद प्रौद्योगिकी, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा और जल कृषि विभाग कार्यरत है ।

दुग्ध प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, हंसडीहा, दुमका

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 में हुई । दुमका जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर दूर हंसडीहा स्थित इस महाविद्यालय के बीटेक इन डेयरी टेकनोलॉंजी के चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में कुल सीटों की संख्या 30 है। इसके अधीन डेयरी प्रौद्योगिकी, डेयरी अभियंत्रण, डेयरी माइक्रोबायोलॉजी, डेयरी प्रबंधन और डेयरी रसायन विभाग कार्यरत है।

मत्स्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, गुमला

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 में हुई। वर्तमान में यह महाविद्यालय कांके स्थित रांची पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय प्रांगण में कार्यरत है और मार्च

2019 से गुमला में कार्य करने लगेगा । इस महाविद्यालय द्वारा संचालित बीटेक इन फिशरीज साइंस के चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में कुल सीटों की संख्या 30 है । इसके अधीन एक्वाकल्चर, मत्स्य संसाधन प्रबंधन , मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन, मत्स्य पर्यावरण प्रबंधन, मत्स्य अभियंत्रण, मत्स्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी एवं मत्स्य प्रसार शिक्षा विभाग कार्यरत है ।

वानिकी शिक्षा

कांके स्थित विश्वविद्यालय परिसर के वानिकी संकाय में रांची वानिकी महाविद्यालय कार्यरत है । इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1979 में हुई थी । इस महाविद्यालय के अधीन वानिकी के विभिन्न विषयों के अधीन स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्क्रमों का संचालन किया जाता है । इसके तहत सीटों की संख्या बीएससी इन फॉरेस्ट्री के चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में 50, एमएससी इन फॉरेस्ट्री के दो वर्षीय पाठ्यक्रम में 24 तथा तीन वर्षीय पीएचडी पाठ्यक्रम में 1 है । वर्तमान में महाविद्यालय के अधीन वनवर्धन एवं कृषि वानिकी , प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी , वनोत्पाद उपयोग तथा वनजीव विज्ञान एवं वृक्ष सुधार विभाग कार्यरत है ।

जैव प्रौद्योगिकी

कांके स्थित विश्वविद्यालय परिसर में एकमात्र जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय का संचालन किया जा रहा है । इसके तहत दो वर्षीय एमएससी इन बायोटेकनोलॉंजी पाठयक्रम हेतु कुल सीटों की संख्या 12 है ।

बैचलर ऑफ़ वोकेशनल (बीवोक) प्रोग्राम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त तीस से अधिक विषयों में सर्टिफिकेट,डिप्लोमा, एडवांस्ड डिप्लोमा और बीवोक पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय

अधीन कृषि, पशुपालन,वानिकी एवं मत्स्य महाविद्यालयों में वर्ष 2018 से लागू किया गया है । इसके अधीन सर्टिफिकेट इन एक्वाकल्चर, सर्टिफिकेट इन पोल्ट्री फार्मिंग, सर्टिफिकेट इन क्वालिटी आर्गेनिक मेन्यूर एंड साँयल टेस्टिंग तथा बीवोक इन ह्यूमन न्यूट्रीशन एंड डायटेटिक्स एवं बीवोक इन हर्बल रिसोर्स टेकनोलाँजी का संचालन किया जा रहा है। प्रत्येक पाठ्यक्रम में सीटों की संख्या 25-25 है।

अनुसंधान निदेशालय

कृषि, पशुपालन एवं वानिकी के विभिन्न विषयों में अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु मुख्यालय स्तर पर निदेशालय अनुसंधान कार्यरत है। इस निदेशालय के माध्यम से विभिन्न संकायों के कार्यरत विभागों और दुमका, दारिसाई (पश्चिमी सिंहभूम) और चियांकी (पलामू) स्थित तीन क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों के अनुसंधान का मूल्यांकन, निरीक्षण और मार्गदर्शन किया जाता है।

विस्तार निदेशालय

कृषि, पशुपालन एवं वानिकी के विभिन्न विषयों में विस्तार गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु मुख्यालय स्तर पर निदेशालय प्रसार शिक्षा कार्यरत है। इस निदेशालय के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम, कृषि तकनीकी सूचना केंद्र, किसान कॉल सेन्टर, हरियाली रेडियो स्टेशन, सामुदायिक रेडियो स्टेशन के आलावा विभिन्न संकायों में कार्यरत विभागों के प्रसार कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है। राज्य के विभिन्न जिलो में प्रसार कार्यकर्मो को बढ़ावा देने हेतु जिला स्तर पर 16 कृषि विज्ञान केन्द्र लातेहार, पलामू, गढ़वा, लोहरदगा, सिमडेगा, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसाँवा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, चतरा, जामताड़ा, दुमका, साहेबगंज और पाकुड़ में कार्यरत हैं, जो क्षेत्रीय समस्याओं और जरूरतों के अनुरूप काम करते हैं।

बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशालय

विभिन्न फसलों के आधार बीज एवं सत्यापित बीज के उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु विश्वविद्यालय प्रांगण में बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशालय कार्यरत है। इस निदेशालय अधीन उपलब्ध प्रक्षेत्रों के अलावा तीन क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों एवं सोलह कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से बीजोत्पादन का कार्य संचालित किया जाता है। इसके अधीन गौरिया करमा (हजारीबाग) में बीज उत्पादन, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता हैं, जो राज्य में विभिन्न फसलों की बीज जरूरतों के अनुरूप काम करते हैं।

किसानोपयोगी सेवाएँ

- कृषि, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन, वानिकी, मधुमक्खी पालन, जल संरक्षण एवं यंत्रीकृत कृषि के संबंध में तकनीकी परामर्श सेवा
- फसल प्रबंधन, उत्पादन, रोग प्रबंधन, पोषण प्रबंधन, पशु-पक्षी पोषण, प्रबंधन, चिकित्सा एवं मत्स्यपालन संबंधी परामर्श सेवा
- कृषि, पशुपालन एवं वानिकी में विभिन्न अवधियों का सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम
- कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) के माध्यम से कृषि उपादानों एवं साहित्य का विक्रय तथा किसान कॉल सेंटर द्वारा किसानों की कृषि संबंधी समस्याओं एवं जिज्ञासा का तकनीकी समाधान
- मिट्टी, जल तथा पौधों के रोग-कीट ग्रस्त नमूनों की जाँच एवं

विभिन्न फसलों के उन्नत बीज तथा बागवानी फसलों की रोपण सामग्री, औषधिय एवं सगंधीय पौध सामग्री, कम लागत के कृषि यंत्र, मशरुम बीज (स्पॉन), वर्मी कम्पोस्ट, जैव उर्वरकों, सूकर नस्ल झारसुक एवं